22

स्वादि से रुधाादि तक - सु तुद् रुध धातुएं

पूर्व पाठ में आप अदादिगण, जुहोत्यादिगण और दिवादिगण का परिचय प्राप्त कर चुके हैं। अब स्वादिगण, तुदागिण, रुधादिगण इन तीन गणों को जानेंगे। पूर्व में भी प्रतिगण में विकरण का भेद है और विकरण भेद से रुपभेद होता है। जैसे स्वादिगणीय धातुओं से श्नु विकरण प्रत्यय, तुदादिगणीय धातुओं से श विकरण प्रत्यय, रुधादिगणीय धातुओं से श्नम्विकरण प्रत्यय होता है। विकरण भेद से रुपभेद जैसे सु धातु से श्नु विकरण में सुनोति रुप, तुद् धातु से श विकरण में तुदति रुप और रुध् धातु से श्नाविकरण में रुणद्धि रुप होता है। इस पाठ में सभी रुपों को ससूत्र प्रदर्शित नहीं करेंगे अन्यथा पाठ विस्तार होगा। पूर्वतन पाठवत् इस पाठ में भी प्रतिगण प्रथम धातु ही आलोच्य होगी। धातु अन्तर की प्रक्रिया स्वयं समझेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- प्रतिगण कौन सा विकरण होगा यह जान पाने में;
- विकरण विधायक सूत्र का अर्थ जान पाने में;
- विशेष सूत्रों की व्याख्या जान पाने में;
- सु धातु के रुप सिद्ध कर पाने में;
- तुद् धातु के रुप सिद्ध कर पाने में;
- रुध् धातु के रुप सिद्ध कर पाने में;
- इनको जानकर अन्य धातु रुप सिद्ध कर पाने में;
- वहाँ प्रदर्शित वैकल्पिक रुप भी जान पाने में।

टिप्पणियाँ

स्वादिगणः

षुञ् अभिषवे उभयपदी, अनिट् स्वादिगणीय धातु से वर्तमान क्रियावृत्तित्व की विवक्षा में कर्ता अर्थ में लट् परस्मैपद में तिप् प्रत्यय होकर सृ+ति स्थिति में शप् प्राप्ति में यह सूत्र आरम्भ होता है।

22.1 स्वादिभ्यः श्नुः॥ (3.1.73)

सूत्रार्थ - कर्तावाची सार्वधातुक परे होने पर स्वादिगण की धातु से परे श्नु प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या - इस विधिसूत्र में स्वादिभ्यः (5/3), श्नुः (1/1) ये दो पद है। कर्तरिशप् को कर्तरि (7/1), सार्वधातुकेयुक् से सार्वधातुके (7/1) पदों की अनुवृत्ति होती है। प्रत्ययः (1/1) परश्च (1/1) का अधिकार है। धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिव्याहारे यङ् सूत्र से धातोः पद अनुवृत्त होता है। दश धातुगणों में स्वादिगण पांचवा है। सु आदिः येषाम् (धातुनाम्) ते स्वादयः (धातवः) इति तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहिसमासः, तेभ्यः स्वादिभ्यः। सूत्रार्थ होता है- कर्ता अर्थ में सार्वधातुक संज्ञक प्रत्यय परे स्वादिगणीय धातुओं से श्नु प्रत्यय होता है। श्नु प्रत्यय का शकार इत्संज्ञक, लशक्वतद्धिते से है। नु मात्र शेष रहता है। यह कर्तरिशप् का अपवाद है।

विशेष - श्नु प्रत्यय के शित् होने से तिङ्शित् सार्वधातुक से सार्वधातुक संज्ञा और सार्वधातुक संज्ञक इस श्नु प्रत्यय की सार्वधातुकमपित् से अपित् होने से ङित्वद्भाव है। इसका फल गुण निषेध है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्वोक्त प्रकार से सु+ति स्थिति में प्राप्त शप् का बाध करके प्रकृत सूत्र से श्नु प्रत्यय होता है क्योंकि यहां ति कर्ता अर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे है। सु+नु+ति स्थिति में तिङ्शित् सार्वधातुकम् से सार्वधातुक संज्ञा में सार्वधातुकार्धधातुकयोः से सु के उकार गुण प्राप्त तब श्नु प्रत्यय अपित् सार्वधातुक होने से क्ङिति च से गुण निषेध होता है। तिप् सार्वधातुक होने सार्वधातुकार्धधातुकयोः से नु के उकार को गुण ओकार होकर **सुनोति** रुप सिद्ध होता है। द्विवचन में तस् अपित् सार्वधातुक होने से ङित्वत्भाव होकर नु को गुण नहीं होता है। अतः सकार को रुत्व विसर्ग होकर **सुनुतः** रुप सिद्ध होता है। बहुवचन में झि प्रत्यय को अन्तादेश में सु नु अन्ति, स्थिति में नु के उकार को इकोयणचि से यण् प्राप्त किन्तु अचिश्नुधातुभ्रुवा "वोरियवुवङौ से उवङ आदेश प्राप्त होता है तब-

22.2 हुश्नुवोः सार्वधातुके॥ (6.4.87)

सूत्रार्थ - अजादि सार्वधातुक परे हो तो, हु धातु तथा श्नुप्रत्ययान्त जो अनेकाच् अंग है, उस के असंयोगपूर्वक उकार के स्थान पर यण् आदेश हो।

सूत्र व्याख्या - यह पद द्वयात्मक विधि सूत्र है। इस सूत्र से यण् आदेश होता है। हुश्नुवोः (6/2), सार्वधातुके (7/1) सूत्रगत पदच्छेद है। अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ सूत्र से अचि (7/1), एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य से अनेकाचः (6/1) असंयोगपूर्वस्य (6/1), ओः सुपि से ओः (6/1),

इको यण् से यण् (1/1) की अनुवृत्ति होती है। अंगस्य का अधिकार है। पद योजना - अचि सार्वधातुके हुश्नुवोः अनुकाचः अंगस्य असंयोगपूर्वस्य ओः यण्। सार्वधातुके इसका अचि विशेषण है। अतः यस्मिन्विधिस्तदादावत्ग्रहणे परिभाषा से श्नु से श्नु प्रत्ययान्तस्य का ग्रहण होता है। अनेकाचः पद श्नुप्रत्ययान्त अंग से सम्बद्ध है। नास्ति संयोगः पूर्णः यस्मात् असौ इति बहुव्रीहिसमासे असंयोगपूर्वः तस्य असंयोगपूर्वस्य। असंयोग पूर्व का ओः विशेषण है न की श्नु का। हुश्च श्नुश्च तयोः इतरेतरयोगद्वन्द्वे हुश्नुवौ, तयोः हुश्नवोः। सूत्रार्थ होता है- अजादि सार्वधातुक परे हो तो, हु धातु तथा श्नुप्रत्ययान्त जो अनेकाच् अंग है, उस के असंयोगपूर्वक उकार के स्थान पर यण् आदेश होता है। स्थानेऽन्तरतमः परिभाषा से उकार के स्थान पर वकरादेश होता है। ये सूत्र अचि श्नुधातु ... से प्राप्त उवङ् का अपवाद है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्वोक्त प्रकार से सु नु अन्ति। स्थिति में श्नु प्रत्यान्त अनेकाच् अंग है। उस अंग का अवयव उकार असंयोगपूर्व भी है। अतः प्रकृत सूत्र से नु के उ को यण् वकार होकर सुन्वन्ति रुप बनता है। सिप् और मिप् से सुनोति के समान प्रक्रिया समझनी चाहिए। सिप् में षत्व आदेश प्रत्ययथोः से होता है। उत्तमपुरुष द्विवचन में वस् में सुनु वस्, बहुवचन में मस् में सुनु मस् स्थिति में अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है।

22.3 लोपश्चास्यान्यतस्यां म्वोः॥ (6.4.107)

सूत्रार्थ - जिस के पूर्व संयोग नहीं ऐसा जो प्रत्यय का अवयव उकार है, तदन्त का विकल्प कर के लोप हो जाता है म् अथवा व् परे हो तो।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र में लोपः (1/1), च, (अव्ययपद), अस्य (6/1) अन्यतरस्याम् (7/1), म्वो (7/1) ये पाँच पद है। सूत्रस्थ अस्य पद से उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् (6.4.106) का परामर्श है। उतश्च प्रत्यया असंयोगपूर्वात् से उतः (5/1), प्रत्ययात् (5/1) असंयोगपूर्वात् (5/1) इनकी अनुवृत्ति होती है। उन तीनों का षष्ठ्येकवचनान्त से विपरिणाम होता है। अंगस्य का अधिकार है। पद योजना - असंयोगपूर्वस्य प्रत्ययस्य उतः अंगस्य म्वोः अन्यतस्याम् लोपः। सूत्रार्थ - जिस के पूर्व संयोग नहीं ऐसा जो प्रत्यय का अवयव उकार है, तदन्त का विकल्प कर के लोप हो जाता है म् अथवा व् परे हो तो। अलोऽन्त्यस्य की परिभाषा से ये आदेश उदन्त अंग के अन्त्य अल् उकार के स्थान पर होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्वोक्त प्रकार से सु नु वस् यहाँ मकार परे है, उकार श्नु प्रत्यय का अवयव है, उकार से पूर्व संयोग नहीं है इसलिए उकार असंयोगपूर्व है। सुनु उकारान्त अंग भी है। अतः प्रकृत सूत्र से उकार को विकल्प से लोप होकर सुन्वः सुन्मः रुप सिद्ध होते हैं लोप अभावपक्ष में सुनुवः, सुनुमः रूप बनते हैं। इस प्रकार लट् परस्मैपद में रूप- सुनोति, सुनुतः सुन्वन्ति। सुनोषि सुनुथः सुनुथ। सुनोमि, सुन्व/ सुनुवः, सुन्मः/ सुनुमः।

विशेष- सु धातु ञित् होने स्वरित ञितः कत्रेऽभिप्राये क्रियाफले से क्रियाफल का कर्तृगामी होने पर सु धातु से विहित लकार के स्थान पर आत्मनेपद प्रत्यय होते हैं। क्रियाफल का परगामी होने से शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् से परस्मैपद प्रत्यय होते हैं।

टिप्पणियाँ

आत्मनेपद स्थलों में त आदि में कोई भी प्रत्यय तिप् नहीं है, इतः सार्वधातुकमपित् से सभी की ङित् संज्ञा होती हैं। जिससे सर्वत्र नु के उ को गुण निषेध होता है। वहि, महि में लोपश्चास्यन्यतरयाम् म्वोः से उकार का विकल्प से लोप होता है। यहां अच् परे होने पर हुश्नुवोःसार्वणातुके से यण् होता है। टित आत्मनेपदानां टेरे से टि को एत्व होता हैं। वहि, महि में विकल्प से उकार का लोप होता है। लट् आत्मनेपद में रूप- सुनुते सुन्वाते सुन्वन्ते। सुनुषे सुन्वाथे सुनुध्वे। सुन्वे सुन्वहे/सुनुवहे सुन्महे/सुनुमहे।

लिट् में द्वित्वकार्य, आदेश प्रत्यययोः से द्वितीय सकार को षकार, लिट् च योग से लिडादेशतिङ् सार्वधातुक है। अजादि प्रत्ययों परे होने पर हुश्नुवोःसार्वधातुके प्राप्त किन्तु अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ सूत्र से सु के उकार के स्थान पर उवङ् आदेश होकर होता है। थल् में आर्धधातुकस्येड्वलादेः से इड् आगम प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् सूत्र से उसका निषेध प्राप्त उसको भी बाध करके क्रादि नियमानुसार नित्य इट् प्राप्त उसका भी अचस्तास्वत्थल्यलिटो नित्यम् से निषेध प्राप्त है। तब उसका बाध करके भारद्वाज नियम से वैकल्पिक इट् आगम होता है। दो रूप सिद्ध होते हैं। वस् और मस् क्रादि नियमानुसार नित्य इट् आगम। मिप् में णलुत्तमो वा से विकल्प णित्त होता है। इस प्रकार लिट् परस्मैपद में- सुषाव सुषुवतुः सुषुवुः। सुषविथ/ सुषोथ, सुषुवथुः सुषुव। सुषाव/ सुषव सुषुविव सुषुविम।

आत्मनेपद स्थलों में अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ सूत्र से सु के उकार के स्थान पर उवङ् आदेश होकर होता है। तप्रत्यय में लिटस्तझयोरेशिरेच् से तकार को एशादेश होकर सु ए में लिटि धातोरनभ्यासस्य सूत्र से द्वित्व सु सु ए। अनभ्यास सु के उकार को उवङ् सु स् उव् ए। आदेश प्रत्यययोः से द्वितीय सकार को षकार होकर **सुषुवे** रूप बनता है। झ प्रत्यय को लिटस्तझयोरेशिरेच् से इरेच् आदेश, द्वित्वादि कार्य होकर सु षु इरे। अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ सूत्र से सु के उकार के स्थान पर उवङ् आदेश होकर **सुषुविरे** रूप बनता है। ध्वम् में सुषुव् इ ध्वे। इडागम एवं ध्वम् के ध को ढ विभाषा से होता है। त झ थ प्रत्ययों को छोड़कर टित आत्मनेपदानाम् टेरे सूत्र से टि को एत्व होता है। थास् ध्वम् वहि महि में क्रादिनियमानुसार नित्य इट् आगम। इस प्रकार आत्मनेपद में रूप - सुषुवे सुषुवाते सुषुविरे। सुषुविषे सुषुवाथे सुषुविढ्वे/सुषुविध्वे। सुषुवे सुषुविवहे सुषुविमहे।

लुट् में कर्तरिशप् से प्राप्त श्नु का अपवाद होकर स्यतासीलृलुटोः सूत्र से धातु से परे तासी प्रत्यय सार्वधातुकार्धधातुकयोः से सु को गुण होता है।शेष प्रक्रिया भू धातुवत् होती है। आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध होता है। इस प्रकार लुट् परस्मैपद में- सोता सोतारौ सोतारः। सोतासि सोतास्थः सोतास्थ। सोतास्मि सोतास्वः सोतास्मः।

प्रथमपुरूष में उभयविधस्थल समान रूप होते हैं। क्योंकि स्थानादि भेद होने पर भी आदेश समान हैं। परस्मैपद में लुटः प्रथमस्य डारौरसः सूत्र से तिप्, तस्, झि को डा, रौ, रस् आदेश आत्मनेपद के त, आताम्, झ को भी होता है। थास् तास् में सकार का लोप होता है। ध्वम् में ध्वम् परे सकार का धि च से लोप होता है। उत्तमपुरूष एकवचन में ह एति से सकार को हकार। थास् को छोड़कर आथाम् आदि में टित आत्मनेपदानाम् टेरे सूत्र से टि को एत्व होता है। है। इस प्रकार लुट् आत्मनेपद में रूप- सोता सोतारौ सोतारः। सोतासे सोतासाथे सोताध्वे। सोताहे सोतास्वहे सोतास्महे।

लृट् में प्राप्त श्नु का अपवाद होकर स्यतासीलृलुटो: सूत्र से धातु से परे स्य प्रत्यय आर्धधातुक संज्ञा, सार्वधातुकार्धधातुकयो: से सु को गुण होता है। शेष प्रक्रिया भू धातुवत् होती है। आदेश प्रत्यययो: से षत्व। आर्धधातुकस्येड् वलादे: से इट् प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध होता है। इस प्रकार लृट् परस्मैपद में- सोष्यति, सोष्यत:, सोष्यन्ति। सोष्यसि, सोष्यथ:, सोष्यथ। सोष्यामि, सोष्याव:, सोष्याम:।

आत्मनेपद स्थलों में थास् को छोड़कर आथाम् आदि में टित आत्मनेपदानाम् टेरे सूत्र से टि को एत्व होता है। आत्मनेपद में रूप- सोष्यते, सोष्येते, सोष्यन्ते। सोष्यसे, सोष्येथे, सोष्यध्वे। सोष्ये, सोष्यावहे, सोष्यामहे।

लोट् परस्मैपद में- सुनोतु, (तातङ् से सुनुतात्) सुनुमाम् सुन्वन्तु। सिप् में सु नु सि सेर्ह्योपिच्च से सि को हि होकर सुनु हि। तब-

22.4 उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात्।। (6.4.106)

सूत्रार्थ - जिस के पूर्व संयोग नहीं ऐसा जो प्रत्यय का अवयव उकार है, उससे परे हि का लुक् हो।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र में उत: (5/1), च, (अव्ययपद), प्रत्ययात् (5/1) असंयोगपूर्वात् (5/1), ये चार पद है। इस विधि सूत्र से हि का लुक् होता है। अतो हे: से हे: (6/1), चिणो लुक् से लुक् (1/1) की अनुवृति है। उन का पंचम्येकवचनान्त से विपरिणाम होता है। अंगस्य का अधिकार है। नास्ति संयोग: पूर्व: यस्मात् असौ असंयोगपूर्व: इति बहुव्रीहिसमास:, तस्मात् असंयोगपूर्वात्। अंगात् का उत: का विशेषण है। सूत्रार्थ होता है - जिस के पूर्व संयोग नहीं ऐसा जो प्रत्यय का अवयव उकार है, उससे परे हि का लुक् होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय - पूर्वोक्त प्रकार से सु नु हि यहाँ उतश्च प्रत्ययसंयोगपूर्वात् से हि का लुक होकर सुनु रूप सिद्ध होता है। तातङ् पक्ष में सुनुतात् रूप सिद्ध होता है। उत्तम पुरूष एक वचन में मिप्, मेर्नि: से मि को नि आडुत्तमस्य पिच्च से आट् का आगम नु को गुण एवं अवादि होकर **सुनवानि** रूप बनता है। वस् से **सुनवाव**, मस् से **सुनवाम** में नित्यं ङित: से सकार का लोप होता है। इस प्रकार लोट् परस्मैपद में रूप- सुनोतु/सुनुतात्, सुनुताम्, सुन्वन्तु। सुनु/सुनुतात्, सुनुतम्, सुनुत। सुनवानि, सुनवाव, सुनवाम।

आत्मनेपद स्थलों उत्तम पुरूष को छोड़कर अन्यत्र सार्वधामुकमपित् से ङित्वत् भाव होता है। उत्तम पुरूष में आडुत्तमस्य पिच्च के कारण नहीं होता। प्रथमपुरूष एकवचन में 'त' प्रत्यय को एत्व सुनुते। आमेत: से एत्व को आम् **सुनुताम्**। आताम् में सुनु आताम् स्थिति में हुश्नुवो:सार्वधातुके से नु के उ को यण् वकार होकर सुन्वाताम् रुप सिद्ध होता है। आथाम् में भी यही प्रक्रिया है। झ प्रत्यय में सुनु झ स्थिति में झोऽन्त: का बाधकर आत्मनेपदेष्वनत: से अत एवं टि को एत्व, आमेत: से एत्व को आम् होकर सुनुताम् स्थिति में : सार्वधातुके से नु के उ को यण् वकार होकर सुन्वाताम् रुप सिद्ध होता है। थास् प्रत्यय में थास: से सूत्र से थास् को से होकर,सवाभ्याम् वामौ

टिप्पणियाँ

सूत्र से, के एकार को वकार एवं आदेश प्रत्यययोः से षत्व होकर सुनुष्व रूप सिद्ध होता है। ध्वम् प्रत्यय में सवाभ्याम् वामौ सूत्रसे से के एकार को अम् होकर सुनुध्वम् रूप सिद्ध होता है। इट् प्रत्यय में टि एत्व को एतऐ से ऐ, आट् का आगम, पु के उ को गुण ओ, आटश्च से वृद्धि, तथा अवादेश होकर सुनवै रूप सिद्ध होता है। वहि महि में इसी प्रकार होता है। आत्मनेपद में रूप- सुनुताम् सुन्वाताम् सुन्वताम्। सुनुष्व सुन्वाथाताम् सुनध्वम्। सुनवै सुनवावहै सुनवामहै।

लङ् में अट् प्रथमपुरूष एकवचन में तिप्, श्नुप्रत्यय, इकार लोप, सार्वधातुक होने से नु को गुण होकर अ**सुनोत्** रूप बनता है। सिप् व मिप् में गुण होता है, तस् आदि में नहीं। वस् मस् में नु के उकार का विकल्प से लोप होता है। इस प्रकार लङ् परस्मैपद में रूप- असुनोत् असुनुताम् असुन्वन्। असुनोः असुनुतम् असुनुत। असुनवम् असुन्व /असुनुव, असुन्म/ असुनुम।

आत्मनेपद स्थल में त आदि प्रत्यय अपित् होने से गुण नहीं, झ में झ को अत्, हुश्नुवोःसार्वधातुके से नु के उ को यण् वकार होकर असुन्वत रुप सिद्ध होता है। वहि महि में नु के उकार का विकल्प से लोप होता है। लङ् आत्मनेपद में रूप- असुनुत, असुन्वाताम्, असुन्वत। असुनुथाः, असुन्वाथाम्, असुनुध्वम्। असुन्वि, असुन्वहि/असुनुवहि, असुन्महि/असुनुमहि।

विधिलिङ् में तिप्, श्नु प्रत्यय, इकार लोप, यासुट् एवं सुट् का आगम तथा दोनों सकारों का लोप होकर सुनुयात् रूप बनता है। इस प्रकार विधिलिङ् परस्मैपद में रूप- सुनुयात्, सुनुयाताम्, सुनुयुः। सुनुयाः, सुनुयातम्, सुनुयात। सुनुयाम्, सुनुयाव, सुनुयाम।

विधिलिङ् आत्मनेपद स्थल में त प्रत्यय, श्नु प्रत्यय, लिङः सीयुट् से सीयुट् सुट्, सकार लोप, नु के उकार को यण् एवं यकार लोप होकर सुन्वीत रुप सिद्ध होता है। आत्मनेपद में रूप- सुन्वीत, सुन्वीयाताम्, सुन्वीरन्। सुन्वीथाः, सुन्वीयाथाम्, सुन्वीध्वम्। सुन्वीय, सुन्वीवहि, सुन्वीमहि।

आशीर्लिङ् में आर्धधातुक होने से श्नु नहीं। अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः से उकार को दीर्घ। हु धातु के समान रूप चलते है आशीर्लिङ् परस्मैपद में रूप - सूयात, सूयास्ताम्, सूयासुः। सूयाः, सूयास्तम्, सूयास्त। सूयासम्, सूयास्व, सूयास्म।

आत्मनेपद स्थल में त प्रत्यय, श्नु प्रत्यय, लिङः सीयुट् से सीयुट् सुट्, लिङाशिषि से आर्धधातुक संज्ञा सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण, षत्व, ष्टुत्व होकर सोषीष्ट रुप सिद्ध होता है। थस् में इसी प्रकार, ध्वम् में विभाषेटः से ध को विकल्प में ढ। सर्वत्र सीयुट् सकार को षत्व। इट् में इटाऽत् से अत्। आत्मनेपद में रूप- सोषीष्ट, सोषीयास्ताम्, सोषीरन्। सोषीष्ठाः, सोषीयास्थाम्, सोषीढ्वम्। सोषीय, सोषीवहि, सोषीमहि।

लुङ् में अट् प्रथमपुरूषैकवचन में तिप् श्नु के अपवाद में च्लि को सिच्, इकार लोप, अस्तिसिचोऽपृक्ते से ईट् आगम, आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध। तब-

22.5 स्तुसुधूञ्भ्यः परस्मैपदेषु॥ (7.2.72)

सूत्रार्थ - स्तु, सु, धूञ् धातुओं से परे सिच् को इट् का आगम हो परस्मैपद प्रत्यय परे हो तो।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र में स्तुसुधूञ्भ्यः (5/3), परस्मैपदेषु (7/3) ये दो पद है। स्तुश्च सुश्च धूञ् च तेषाम् इति इतरेतरयोगद्वन्द्वसमासः तेभ्यः स्तुसुधूञभ्यः। अञ्जेः सिचि से सिचि (7/1), की अनुवृति है। इडत्त्यर्तिव्ययतीनाम् से इट् (1/1), की अनुवृति है। सूत्रार्थ होता है - स्तु, सु, धूञ् धातुओं से परे सिच् को इट् का आगम होता है, परस्मैपद प्रत्यय परे हो तो। टित् होने से आदि अवयव होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय - पूर्वोक्त प्रकार से सु धातु से लुङ् में तिप्, इट् आगम, सु को वृद्धि, एवं आवादेश, सकार लोप, सवर्ण दीर्घ होकर असावीत् रूप बनता है। परस्मैपद में रूप - असावीत्, असाष्टिाम्, असाविषुः। असावीः, असाविष्टम्, असाविष्ट। असाविषम्, असाविष्व, असाविष्म।

आत्मनेपद स्थल में अट्, तप्रत्यय, श्नु प्रत्यय, श्नु के अपवाद में च्लि को सिच्, आर्धधातुक संज्ञा, सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण, षत्व, ष्टुत्व होकर असोष्ट रुप सिद्ध होता है। इसी प्रकार थास् में समझे। झ को अत् गुण, षत्व, ष्टुत्व होकर असोषत। ध्वम् में धकार को ढकार। आत्मनेपद में रूप- असोष्ट, असोषाताम्, असोषत। असोष्ठाः, असोषाथाम्, असोढ्वम्। असोषी, असोष्वहि असोष्महि।

लृङ् में अट्, तिप्, इकार लोप, श्नु के स्थान पर स्य, आर्धधातुक संज्ञा, सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण, षत्व, ष्टुत्व होकर असोष्यत् रुप सिद्ध होता है। लृङ् में उभयस्थल में सर्वत्र आदेश प्रत्यययोः से षत्व होता है। उत्तमपुरूषैकवचन में अमिपूर्वः से पूर्वरूप। वस् मस् में नित्यं ङितः से सकार लोप। लृङ् परस्मैपद में रूप - असोष्यत्, असोष्यताम्, असोष्यन्। असोष्यः, असोष्यतम्, असोष्यत। असोष्यम्, असोष्याव, असोष्याम।

लृङः आत्मनेपद में पूर्ववत् प्रक्रिया में रूप - असोष्यत, असोष्येताम्, असोष्यन्त। असोष्यथाः, असोष्येथाम्, असोष्यध्वम्। असोष्ये, असोष्यावहि, असोष्यामहि।

पाठगत प्रश्न 22.1

1. स्वादिगणीय धातुओं से कौन सा विकरण प्रत्यय होता है?
2. स्तुसुधूञ्भ्यः परस्मैपदेषु क्या करता है?
3. श्नु प्रत्यय विधायक सूत्र है?
4. स्वादिगणीय सु धातु का अर्थ क्या है?
5. सु धातु परस्मैपद लुङ् प्रथमपुरुष एकवचन में रूप होता है?
6. सु धातु आत्मनेपद लट् प्रथमपुरुष बहुवचन में रूप होता है?
7. सु धातु परस्मैपद लिट् मध्यमपुरुष एकवचन में रूप होता है?

टिप्पणियाँ

8. श्नु प्रत्यय में शकार इत्संज्ञा का प्रयोजन क्या है?

9. आशीर्लिङ् में किसलिए श्नु नहीं होता है?

10. सूयात् में सु के उ को किस से दीर्घ होता है?

तुदादिगणः

तुद व्यथने स्वरितेत, अनिट् तुदादिगणीय धातु से वर्तमान क्रियावृत्तित्व की विवक्षा में कर्ता अर्थ में लट् परस्मैपद में तिप् प्रत्यय होकर तुद्+ति स्थिति में शप् प्राप्ति में यह सूत्र आरम्भ होता है।

22.6 तुदादिभ्यः शः॥ (3.1.77)

सूत्रार्थ - कर्त्तवाची सार्वधातुक परे होने पर तुदादिगण की धातु से परे श प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या - इस विधिसूत्र में तुदादिभ्यः (5/3), शः (1/1) ये दो पद है। कर्तरिशप् को कर्तरि (7/1), सार्वधातु के यक् से सार्वधातु के (7/1) पदों की अनुवृत्ति होती है। प्रत्ययः (1/1) परश्च (1/1) का अधिकार है। धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिव्याहारे यङ् सूत्र से धातोः पद अनुवृत्त होता है। दश धातुगणों में तुदादिगण छटा है। तुद् आदिः येषाम् (धातुनाम्) ते तुदाादयः (धातवः) इति तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहिसमासः, तेभ्यः तुदाादिभ्यः। सूत्रार्थ होता है- कर्ता अर्थ में सार्वधातुक संज्ञक प्रत्यय परे तुदादिगणीय धातुओं से श प्रत्यय होता है। श प्रत्यय का शकार इत्संज्ञक लशक्वतद्धिते से है।अपित् होने से ङित्वत् भाव है। यह कर्तरिशप् का अपवाद है।

विशेष - श प्रत्यय के शित् होने से तिङ्शित् सार्वधातुक से सार्वधातुक संज्ञा और सार्वधातुक संज्ञक इस श प्रत्यय की सार्वधातुकमपित् से अपित् होने से ङित्वद्भाव है। इसका फल गुण निषेध है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्वोक्त प्रकार से तुद्+ति स्थिति में प्राप्त शप् का बाध करके प्रकृत सूत्र से श प्रत्यय होता है क्योंकि यहां ति कर्ता अर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे है। तुद्+अ+ति स्थिति में तिङ्शित् सार्वधातुकम् से सार्वधातुक संज्ञा में सार्वधातुकार्धधातुकयोः से सु के उकार गुण प्राप्त तब श प्रत्यय अपित् सार्वधातुक होने से क्ङिति च से गुण निषेध होकर **तुदति** रुप सिद्ध होता है। हैं। इस प्रकार लट् परस्मैपद में रूप- तुदति, तुदतः, तुदन्ति। तुदसि, तुदथः, तुदथ। तुदामि, तुदावः, तुदामः।

विशेष- तुद् धातु स्वरितेत्त्वात् होने से स्वरित ञितः कर्तृऽभिप्राये क्रियाफले से क्रियाफल का कर्तृगामी होने पर तुद् धातु से विहित लकार के स्थान पर आत्मनेपद प्रत्यय होते हैं। क्रियाफल का परगामी होने से शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् से परस्मैपद प्रत्यय होते हैं।

आत्मनेपद स्थलों में त आदि में कोई भी प्रत्यय तिप् नहीं है, श प्रत्यय की सार्वधातुकमपित् से अपित् होने से ङित्वद्भाव है। अतः लघूपधा को क्ङिति च गुण निषेध है। टित् आत्मनेपदानां

टेरे से टि को एत्व होता है। आताम् में आ का इय्, यकार लोप, अ+इ को गुण। थास् में थास् को से। इट् में टि एवं पररूप। वहि, महि मे अतो दीर्घो यञि से दीर्घ एकादेश होता है। लट् आत्मनेपद में रूप- तुदते, तुदेते, तुदन्ते। तुदसे, तुदेथे, तुदध्वे। तुदे, तुदावहे, निषेध तुदामहे।

लिट् तिप्, सिप्, मिप् में द्वित्वकार्य, हलादिशेष, लघूपधा गुण। अन्यत्र असंयोगाल्लिट् कित् से कित् होने से क्ङिति च लघूपधा गुण निषेध। थल् में आर्धधातुकस्येड्वलादेः से इड् आगम प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् सूत्र से उसका निषेध प्राप्त उसको भी बाध करके क्रादि नियमानुसार नित्य इट् प्राप्त उसका भी अचस्तास्वत्थल्यलिटो नित्यम् से प्राप्त है। तब उसका बाध करके भारद्वाज नियम से वैकल्पिक इट् आगम होता है। दो रूप सिद्ध होते हैं। वस् और मस् क्रादि नियमानुसार नित्य इट् आगम। इस प्रकार लिट् परस्मैपद में- तुतोद, तुतुदतुः, तुतुदुः। तुतोदिथ, तुतुदथुः, तुतुद। तुतोद, तुतुदिव, तुतुदिम।

आत्मनेपद स्थलों में तप्रत्यय में लिटस्तझयोरेशिरेच् से तकार को एशादेश, झ प्रत्यय को इरेच् आदेश, लिटि धातोरनभ्यासस्य सूत्र से द्वित्व, हलादिशेष, त झ थ प्रत्ययों को छोड़कर टित आत्मनेपदानाम् टेरे सूत्र से टि को एत्व होता है। थास् ध्वम् वहि महि में क्रादिनियमानुसार नित्य इट् आगम। इस प्रकार आत्मनेपद में रूप - तुतुदे, तुतुदाते, तुतुदिरे। तुतुदिषे, तुतुदाथे, तुतुदिध्वे। तुतुदे, तुतुदिवहे, तुतुदिमहे।

लुट् में इट् निषेध। श का अपवाद होकर स्यतासीलृलुटोः सूत्र से धातु से परे तासी प्रत्यय, पुगन्तलघूपधस्य च से तुद् के उ को गुण होता है। अभ्यास की टि का लोप। खरि च से दकार को तकार। आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध होता है। शेष प्रक्रिया भू धातुवत् होती है। इस प्रकार लुट् परस्मैपद में- तोत्ता, तोत्तारौ, तोत्तारः। तोत्तासि, तोत्तास्थः, तोत्तास्थ। तोत्तास्मि, तोत्तास्वः, तोत्तास्मः।

आत्मनेपद स्थल पूर्ववत् प्रक्रिया होती है। इसके लिए एध् धातु को देखे। इस प्रकार लुट् आत्मनेपद में रूप- तोत्ता, तोत्तारौ, तोत्तारः। तोत्तासे, तोत्तासाथे, तोत्ताध्वे। तोत्ताहे, तोत्तास्वहे, तोत्तास्महे।

लृट् में प्राप्त श का अपवाद होकर स्यतासीलृलुटोः सूत्र से धातु से परे स्य प्रत्यय आर्धधातुक संज्ञा, पुगन्तलघूपधस्य च से तुद् के उ को गुण होता है। खरि च से दकार को तकार। शेष प्रक्रिया भू धातुवत् होती है। आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध होता है। इस प्रकार लुट् परस्मैपद में- तोत्स्यति, तोत्स्यतः, तोत्स्यन्ति। तोत्स्यसि, तोत्स्यथः, तोत्स्यथ। तोत्स्यामि, तोत्स्यावः, तोत्स्यामः।

आत्मनेपद स्थलों में थास् को छोड़कर आथाम् आदि में टित आत्मनेपदानाम् टेरे सूत्र से टि को एत्व होता है। आत्मनेपद में रूप- तोत्स्यते, तोत्स्येते, तोत्स्यन्ते। तोत्स्यसे, तोत्स्येथे, तोत्स्यध्वे। तोत्स्ये, तोत्स्यावहे, तोत्स्यामहे।

लोट् उभयस्थल में कोई विशेष कार्य नहीं है। परस्मैपद में रूप- तुदतु, (तातङ् से तुदतात्) तुदताम् तुदन्तु। तुद (तातङ् से तुदतात्), तुदतम्, तुदत। तुदानि, तुदाव, तुदाम।

आत्मनेपद में रूप- तुदताम्, तुदेताम्, तुदन्ताम्। तुदस्व, तुदेथाम्, तुदध्वम्। तुदै, तुदावहै, तुदाम है।

लङ् में अट् प्रथमपुरूष एकवचन में तिप्, शप्रत्यय, इकार लोप, सार्वधातुकमपित् से गुण निषेध होता है। झलां जशोऽन्ते से जश्त्व,वाऽवसाने से विकल्प चर्त्व तकार होता है। इस प्रकार लङ् परस्मैपद में रूप- अतुदत्, अतुदताम्, अतुदन्। अतुदः, अतुदतम्, अतुदत। अतुदम्, अतुदाव, अतुदाम।

आत्मनेपद स्थल में पूर्ववत् सार्वधातुकमपित् से गुण निषेध। लङ् आत्मनेपद में रूप- अतुदत, अतुदेताम्, अतुदन्त। अतुदथाः, अतुदेथाम्, अतुदध्वम्। अतुदे:, अतुदावहि, अतुदामहि।

विधिलिङ् में तिप्, श प्रत्यय, इकार लोप, यासुट् एवं सुट् का आगम तथा दोनों सकारों का लोप, यकार लोप, अ+इ को गुण होकर रूप बनता है। शेष प्रक्रिया भू धातुवत् होती है। इस प्रकार विधिलिङ् परस्मैपद में रूप- तुदेत्, तुदेताम्, तुदेयुः। तुदेः, तुदेतम्, तुदेत। तुदेयम्, तुदेव, तुदेम। विधिलिङ् आत्मनेपद स्थल में प्रक्रिया एध् धातुवत् होती है। आत्मनेपद में रूप- तुदेत, तुदयोताम्, तुदेरन्। तुदेथाः, तुदेयाथाम्, तुदेध्वम्। तुदेय, तुदेवहि, तुदेमहि।

आशीर्लिङ् में लिङाशिषि से आर्धधातुक होने से श प्रत्यय नहीं होती है। तिप् में इकार लोप, यासुट् एवं सुट् का आगम तथा सकार का लोप, क्क्ङिति च गुण निषेध। आशीर्लिङ् परस्मैपद में रूप - तुद्यात्, तुद्यास्ताम्, तुद्यासुः। तुद्याः, तुद्यास्तम्, तुद्यास्त। तुद्यासम्, तुद्यास्व, तुद्यास्म।

आत्मनेपद स्थल में शप्रत्यय नही होता, आशीर्लिङ् आर्धधातुक होने से। तप्रत्यय, सीयुट् सुट्, स्थिति में तुद् सीय् स् त। समुदाय की तिङ् है, लिङाशिषि से आर्धधातुक संज्ञा है। आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध होता है। लोपो व्योर्वलि से यकार लोप। पुगन्तलघूपधस्य च से गुण प्राप्त किन्तु -

22.7 लिङ्सिचावात्मनेपदेषु॥ (1.2.11)

सूत्रार्थ - इक् के समीप जो हल् उस से परे हलादि लिङ् और सिच् कित् हों तङ् अर्थात् आत्मनेपद प्रत्यय परे हो तो।

सूत्रव्याख्या - इस विधि सूत्र में लिङ्सिचौ (1/2), आत्मनेपदेषु (7/3) ये दो पद है। लिङ् च सिच् च तयोः इतरेतरयोगद्वन्द्वे लिङ्सिचौ इति। इको झल् से झल् (1/1), हलनताच्च से हलन्तात् (5/1), असंयोगाल्लिट् कित् से कित् (1/1), की अनुवृति है। सूत्रार्थ होता है - इक् के समीप जो हल् उस से परे हलादि लिङ् और सिच् कित् हों तङ् अर्थात् आत्मनेपद प्रत्यय परे हो तो।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय - पूर्वोक्त प्रकार से तुद् सीय् त स्थिति में प्रक्रत सूत्र से कित् संज्ञा। सुडागम, षत्व, ष्टुत्व होकर तुत्सीष्ट रुप सिद्ध होता है। अन्य रूप स्वयं समझें। आशीर्लिङ्, आत्मनेपद में रूप - तुत्सीष्ट, तुत्सीयास्ताम्, तुत्सीरन्। तुत्सीष्ठाः, तुत्सीयास्थाम्, तुत्सीध्वम्। तुत्सीय, तुत्सीवहि, तुत्सीमहि।

लुङ् परस्मैपद में स्थल में तुद् से अट्, तिप् प्रत्यय, इकार लोप, शप्रत्यय के अपवाद में च्लि को सिच्, आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध होता है। अस्तिसिचोऽपुक्ते से ईट् आगम, वदव्रजहलन्तस्याचः से तुद् के उकार को वृद्धि औ, सकार लोप

एवं चर्त्व होता है। लुङ् परस्मैपद में रूप- अतौत्सीत्, अतौत्ताम्, अतौत्सुः। अतौत्सीः, अतौत्तम्, अतौत्त। अतौत्सम्, अतौत्स्व, अतौत्स्म।

वदव्रजहलन्तस्याचः सूत्र से आत्मनेपद में तुद् के उकार को वृद्धि नहीं होती है। लिङ्सचावात्मनेपदेषु से कित् होने से गुणवृद्धि नहीं होती। आत्मनेपद में रूप- अतुत्त, अतुत्साताम्, अतुत्सत। अतुत्थाः, अतुत्साथाम्, अतुद्ध्वम्। अतुत्सि, अतुत्स्वहि, अतुत्स्महि।

लृङ् में अट्, तिप्, इकार लोप, श के स्थान पर स्य, आर्धधातुक संज्ञा, पुगन्तलघूपधस्य च से तुद् के उ को गुण होता है। खरि च से दकार को तकार। शेष प्रक्रिया भू धातुवत् होती है। आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध होता है। उत्तमपुरूषैकवचन में अमिपूर्वः से पूर्वरूप। वस् मस् में नित्यं ङितः से सकार लोप। लृङ् परस्मैपद में रूप - अतोत्स्यत्, अतोत्स्यताम्, अतोत्स्यन्। अतोत्स्यः, अतोत्स्यतम्, अतोत्स्यत। अतोत्स्यम्, अतोत्स्याव, अतोत्स्याम।

लृङ्ः आत्मनेपद में पूर्ववत् प्रक्रिया में रूप - अतोत्स्यत, अतोत्स्येताम्, अतोत्स्यन्त। अतोत्स्यथाः, अतोत्स्येथाम्, अतोत्स्यध्वम्। अतोत्स्ये, अतोत्स्यावहि, अतोत्स्यामहि।

पाठगत प्रश्न 22.2

1. तुदादिगणीय धातुओं से कौन सा विकरण प्रत्यय होता है?
2. लिङ्सचावात्मनेपदेषु क्या अर्थ है?
3. श प्रत्यय विधायक सूत्र है?
4. तुद् धातु तुदादिगणीय तुद् धातु का अर्थ क्या है?
5. तुद् धातु लुङ् तिप् में रूप होता है?
6. तुद् धातु आत्मनेपद आशिर्लिङ् मध्यमपुरुषैकवचन में रूप होता है?
7. आत्मनेपद लिट् मध्यमपुरुष बहुवचन में रूप होता है?
8. श प्रत्यय में शकार इत्संज्ञा का प्रयोजन क्या है?
9. तुद् धातु आशीर्लिङ् में तप्रत्यय में रूप होता है?
10. तुदति में लघूपधगुण क्यों नहीं होता है?

रुधादिगणः

रुधिर् आवरणे में इर इत्संज्ञा एवं लोप, रुध् शेष रहता है। इरितो वा सूत्र से विकल्प में अङ् का विधान होता है। रुधिर् आवरणे धातु स्वरितेत् अनिट् सकर्मक रुधादिगणीय धातु से वर्तमान क्रियावृत्तित्व की विवक्षा में कर्ता अर्थ में लट् परस्मैपद में तिप् प्रत्यय होकर सश+ति स्थिति में शप् प्राप्ति में यह सूत्र आरम्भ होता है।

टिप्पणियाँ

22.8 रुधादिभ्यः श्नम्॥ (3.1.78)

सूत्रार्थ – कर्तृवाचक सार्वधातुक परे होने पर रुधादिगण की धातु से परे श्नम् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या – इस विधिसूत्र में रुधादिभ्यः (5/3), श्नम् (1/1) ये दो पद है। कर्तरिशप् को कर्तरि (7/1), सार्वधातु के यक् से सार्वधातुके (7/1) पदों की अनुवृत्ति होती है। प्रत्ययः (1/1) परश्च (1/1) का अधिकार है। धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिव्याहारे यङ् सूत्र से धातोः पद अनुवृत्त होता है। दश धातुगणों में स्वादिगण सातंवा है। रुध् आदिः येषाम् (धातुनाम्) ते रुधादयः (धातवः) इति तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहिसमासः, तेभ्यः रुधादिभ्यः। सूत्रार्थ होता है– कर्ता अर्थ में सार्वधातुक संज्ञक प्रत्यय परे स्वादिगणीय धातुओं से श्नम् प्रत्यय होता है। श्नम् प्रत्यय के शकार की लशक्वतद्धिते मकार की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा होती है। न मात्र शेष रहता है। यह कर्तरिशप् का अपवाद है।

विशेष – श्नम् प्रत्यय के शित् होने से तिङ्शित् सार्वधातुक से सार्वधातुक संज्ञा और सार्वधातुक संज्ञक इस श्नम् प्रत्यय की सार्वधातुकमपित् से अपित् होने से ङित्वद्भाव है। इसका फल गुण निषेध है। मित् होने से मिदचोऽन्त्यात्परः से अन्तिम अच् के परे होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय – पूर्वोक्त प्रकार से रुध्+ति स्थिति में प्राप्त शप् का बाध करके प्रकृत सूत्र से श्नम् प्रत्यय होता है क्योंकि यहां ति कर्ता अर्थ सार्वधातुक प्रत्यय परे है। मिदचोऽन्त्यात्परः से अन्तिम अच् के परे होता है। रु+न+ध्+ति स्थिति में

22.9 झषस्तथोर्धोऽधः॥ (8.2.40)

सूत्रार्थ – झष् से परे तकार, थकार को धकार आदेश हो, परन्तु धा धातु से परे नहीं होता।

सूत्र व्याख्या– इस विधि सूत्र में झषः (5/1),तथोः (6/2), धः(1/1),अधः (5/1)ये चार पद हैं। धः का धकार उच्चारणार्थ है। न धाः अधाः तस्मात् अधः। झष् प्रत्याहार है। सूत्रार्थ होता है– झष् से परे तकार, थकार को धकार आदेश हो, परन्तु धा धातु से परे नहीं होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय – पूर्वोक्त प्रकार से रु+न+ध्+ति। स्थिति में प्रकृत सूत्र से तकार को धकार, जश्त्व एवं णत्व होकर रुणद्धि रुप बनता है। तस् में रु न ध् तस्। तस् प्रत्यय की सार्वधातुकमपित् से अपित् होने से ङित्वद्भाव है। इसका फल गुण निषेध है तब–

22.10 श्नसोरल्लोपः॥ (6.4.111)

सूत्रार्थ – श्न तथा अस् के अकार का लोप हो जाता है सार्वधातुक कित्, ङित् परे हो तो।

सूत्रव्याख्या– इस विधि सूत्र में श्नसोः (6/2), अल्लोपः (1/1), ये दो पद हैं। श्नश्च अस् च तयोः इतरेतरयोगद्वन्द्वः श्नसोः। अतः लोपः अल्लोपः षष्ठीतत्पुरुषसमासः। अतः उत्सार्वधातुके से सार्वधातुके, गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि से क्ङिति की अनुवृत्ति होती है। सूत्रार्थ होता है– श्न तथा अस् के अकार का लोप हो जाता है सार्वधातुक कित्, ङित् परे हो तो।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्वोक्त प्रकार से रु+न+ध्+तस् स्थिति में प्रकृत सूत्र से नकार के अकार का लोप, तकार को धकार, जश्त्व एवं सकार को विसर्ग होकर रुण्धः रुप बनता है। लोपाभाव में रुन्द्धः रुप बनता है।

बहुवचन में झिप्रत्यय, झ को अन्तादेश, श्नम्, श्नसोरल्लोपः से नकार होकर रु न् ध् अन्ति एवं परसवर्ण होकार रुन्धन्ति रुप बनता है। सिप् में श्नसोरल्लोपः प्रवृत नहीं होता। णत्व, जश्त्व, चर्त्व होकार रुणत्सि रुप बनता है। इसी प्रकार रुणद्मि। वस् में श्नम्, श्नसोरल्लोपः से नकार के अकार लोप होकर रु न् ध् वस्, सकार को विसर्ग रुन्ध्वः। इसी प्रकार मस् से रुन्ध्मः। लट् परस्मैपद में रूप-रुणद्धि, रुन्धः/रुन्द्धः, रुन्धन्ति। रुणत्सि, रुन्धः/रुन्द्धः, रुन्ध/रुन्द्ध,। रुणद्मि, रुन्ध्वः, रुन्ध्मः।

विशेष- रुध् धातु स्वरितेत होने से स्वरितञितः कर्तृऽभिप्राये क्रियाफले से क्रियाफल का कर्तृगामी होने पर रुध् धातु से विहित लकार के स्थान पर आत्मनेपद प्रत्यय होते हैं। क्रियाफल का परगामी होने से शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् से परस्मैपद प्रत्यय होते हैं।

आत्मनेपद स्थलों में त आदि में कोई भी प्रत्यय तिप् नहीं है, इतः सार्वधातुकमपित् से सभी की ङित् संज्ञा होती हैं। जिससे सर्वत्र श्नसोरल्लोपः से नकार के अकार लोप। त प्रत्यय में टि को एत्व, तकार को धकार, एक धकार का लोप। लोप अभाव पक्ष में जश्त्व होता है। बहुवचन में झ को अत् होता है। अन्य प्रक्रिया स्वयं कीजिए। लट् आत्मनेपद में रूप- रुन्धे/रुन्द्धे, रुन्धाते, रुन्धते। रुन्त्से रुन्धाथे, रुन्द्ध्वे। रुन्धे, रुन्ध्वहे रुन्ध्महे।

लिट् में द्वित्वकार्य, हलादिशेषे, आर्धधातुक होने से पुगन्तलघूपधस्य च से लघूपधा को गुण, णल् आदि कार्य, थल् में आर्धधातुकस्येड्वलादेः से इड् आगम प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् सूत्र से उसका निषेध प्राप्त उसको भी बाध करके क्रादि नियमानुसार नित्य इट् प्राप्त उसका भी अचस्तास्वल्थल्यलिटो नित्यम् से निषेध प्राप्त है। तब उसका बाध करके भारद्वाज नियम से वैकल्पिक इट् आगम होता है। दो रूप सिद्ध होते हैं। वस् और मस् क्रादि नियमानुसार नित्य इट् आगम। इस प्रकार लिट् परस्मैपद में- रुरोध, रुरुधतुः, रुधतुः। रुरोधिथ, रुरुधथुः, रुरुध। रुरोध, रुरुधिव, रुरुधिम।

आत्मनेपद स्थलों में कोई विशेष कार्य नहीं। इसी प्रकार आत्मनेपद में रूप - रुरुधे, रुरुधाते, रुरुधिरे। रुरुधिषे, रुरुधिथे, रुरुधिध्वे। रुरुधे, रुरुधिवहे, रुरुधिमहे।

लुट् में कर्तरिशप् से प्राप्त श्नम् का अपवाद होकर स्यतासीलृलुटोः सूत्र से धातु से परे तासी प्रत्यय आर्धधातुक होने से पुगन्तलघूपधस्य च से लघूपधा को गुण। डित् से परे टि का लोप। तकार को धकार। शेष प्रक्रिया भू धातुवत् होती है। आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध होता है। इस प्रकार लुट् परस्मैपद में- रोद्धा, रोद्धारौ, रोद्धारः। रोद्धासि, रोद्धास्थः, रोद्धास्थ। रोद्धास्मि, रोद्धास्वः, रोद्धास्मः।

इस प्रकार लुट् आत्मनेपद में रूप- रोद्धा, रोद्धारौ, रोद्धारः। रोद्धासे, रोद्धासाथे, रोद्धाध्वे। रोद्धाहे, रोद्धास्वहे, रोद्धास्महे।

टिप्पणियाँ

लृट् में प्राप्त श्नम् का अपवाद होकर स्यतासीलृलुटोः सूत्र से धातु से परे स्य प्रत्यय आर्धधातुक होने से पुगन्तलघूपधस्य च से लघूपधा को गुण होता है। खरि च से धकार को तकार। शेष प्रक्रिया भू धातुवत् होती है। आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध होता है। इस प्रकार लुट् परस्मैपद में- रोत्स्यति, रोत्स्यतः, रोत्स्यन्ति। रोत्स्यसि, रोत्स्यथः, रोत्स्यथ। रोत्स्यामि, रोत्स्यावः, रोत्स्यामः।

आत्मनेपद स्थलों में थास् को छोड़कर आथाम् आदि में टित् आत्मनेपदानाम् टेरे सूत्र से टि को एत्व होता है। आत्मनेपद में रूप- रोत्स्यते, रोत्स्येते, रोत्स्यन्ते। रोत्स्यसे, रोत्स्येथे, रोत्स्यध्वे। रोत्स्ये, रोत्स्यावहे, रोत्स्यामहे।

लोट् परस्मैपद में एरुः से उत्व, धत्व, जश्त्व, णत्व होकार रुणद्धु। (तातङ् से रुन्धात्/रुन्द्धात्) सिप् में सेर्ह्यपिच्च से सि करे हि, हुझल्भ्यो हेर्धिः से हि को धि, श्नसोरल्लोपः से नकार के अकार लोप। तकार को धकार, एक धकार का लोप। लोप अभाव पक्ष में जश्त्व होता है। उतम पुरूष में आडुत्तमस्य पिच्च से आट् अपित् होने से अकार लोप नहीं। इस प्रकार लोट् परस्मैपद में रूप- रुणद्धु/रुन्धात्/रुन्द्धात्, रुन्धाम्/रुन्द्धाम्, रुन्धन्तु। रुन्धि/रुन्द्धि/रुन्धात्/रुन्द्धात्, रुन्धम्/रुन्द्धम्, रुन्ध/रुन्द्ध। रुणधानि, रुणधाव, रुणधाम।

आत्मनेपद स्थलों में रूप- रुन्धाम्/रुन्द्धाम्, रुन्धाताम्, रुन्धन्ताम्। रुन्त्स्व रुन्धाथम् रुन्ध्वम्/ रुन्द्ध्वम्। रुणधै, रुणधावहै, रुणधामहै।

लङ् में अट् प्रथमपुरूष एकवचन में तिप्, श्नम् प्रत्यय को णत्व, इकार लोप, अरुणध् त् स्थिति में हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् से तकार लोप,पदान्त धकार को जश्त्व, विकल्प में चर्त्व होकर अरुणत् रूप बनता है। चर्त्व अभाव में अरुणद्। सिप् में

22.11 दश्च॥ (8.2.75)

सूत्रार्थ - सिप् परे पर धातु के पदान्त दकार के स्थान पर विकल्प से रु आदेश हो।

सूत्रव्याख्या- इस विधि सूत्र में दः (6/1), च अव्ययपद ये दो पद है। यहां सिपि धातो रुर्वा सूत्र की अनुवृति है। दः धातोः का विशेषण है। अतः तदन्तविधि से दकारान्त धातु अर्थ आता है। सूत्रार्थ होता है- सिप् परे पर धातु के पदान्त दकार के स्थान पर विकल्प से रु आदेश होता है। अलोऽन्त्यस्य से अन्तिम अल् के स्थान पर होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - रुध् धातु से लङ् में अट्, सिप्,श्नम्, णत्व, इकार लोप, अपृक्त तकार लोप, जश्त्व, विकल्प में चर्त्व होकर अरुणत् रूप बनता है। चर्त्व अभाव में अरुणद् स्थिति में प्रक्रत सूत्र से दकार को रु एवं रेफ को विसर्ग होकर अरुणः रूप बनता है।

इस प्रकार लङ् परस्मैपद में रूप- अरुणत् /अरुणद्, अरुन्धाम्, अरुन्धन्। अरुणः/अरुणत्/अरुणद्, अरुन्धम्/अरुन्द्धम्, अरुन्ध/अरुन्द्ध। अरुणधम्, अरुन्ध्व, अरुन्ध्म।

लङ् आत्मनेपद में रूप- अरुन्ध/अरुन्द्ध, अरुन्धाताम्, अरुन्धत। अरुन्धाः/ अरुन्द्धाः, अरुन्धाथाम्, अरुन्ध्वम्,। अरुन्धि अरुन्ध्वहि, अरुन्ध्महि।

विधिलिङ् में तिप्, श्नम् प्रत्यय, इकार लोप, यासुट् एवं सुट् का आगम तथा दोनों सकारों का लोप, श्नसोरल्लोपः से नकार के अकार लोप होकर रुन्ध्यात् रूप बनता है। इस प्रकार विधिलिङ् परस्मैपद में रूप- रुन्ध्यात्, रुन्ध्याताम्, रुन्ध्युः। रुन्ध्याः, रुन्ध्यातम्, रुन्ध्यात। रुन्ध्याम्, रुन्ध्याव, रुन्ध्याम।

विधिलिङ् आत्मनेपद में रूप- रुन्धीत्, रुन्धीयाताम्, रुन्धीरन्। रुन्धीयाः, रुन्ध्सीयाथाम्, रुन्धीध्वम्। रुन्धीय, रुन्धीवहि, रुन्धीमहि।

आशीर्लिङ् में आर्धधातुक होने से श्नम् नहीं होता। आशीर्लिङ् परस्मैपद में रूप- रुध्यात्, रुध्यास्ताम्, रुध्यासुः। रुध्याः, रुध्यास्तम्, रुध्यास्त। रुध्यासम्, रुध्यास्व, रुध्यास्म।

आत्मनेपद स्थल में त प्रत्यय, श्नम् प्रत्यय, लिङः सीयुट् से सीयुट् सुट्, सुट्तिथोः से सुट्, लिङाशिषि से आर्धधातुक संज्ञा, आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध होता है। लोपो व्योर्वलि से यकार लोप षत्व, ष्टुत्व, चर्त्व होकर रुत्सीष्ट रुप सिद्ध होता है। आत्मनेपद में रूप- रुत्सीष्ट रुत्सीयास्ताम् रुत्सीरन्। रुत्सीष्ठाः रुत्सीयास्थाम् रुत्सीध्वम्। रुत्सीय रुत्सीवहि रुत्सीमहि।

लुङ् में अट् प्रथमपुरूषैकवचन में तिप् श्नम् के अपवाद में च्लि को सिच्, उसका बाध करके इरितो वा से च्लि को विकल्प से अङ् आदेश, इकार लोप, ङित् होने से लघूपधागुण एवं इट् आगम नहीं होता। परस्मैपद में अङ् आदेश रूप - अरुधत्, अरुधताम्, अरुधन्। अरुधः, अरुधतम्, अरुधत। अरुधम्, अरुधाव, अरुधाम। अङभाव पक्ष में - च्लि को सिच् वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि, धकार को चर्त्व होता है - अरौत्सीत्, अरौद्धाम्, अरौत्सुः। अरौत्सीः, अरौद्धम्, अरौद्ध। अरौत्सम्, अरौत्स्व, अरौत्स्म। सिच् की आर्धधातुक संज्ञा, आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध।

आत्मनेपद स्थल में लिङ्सचावात्मनेपदेषु से सिच् कित् होने से लघूपधगुण नहीं होता। अट्, तप्रत्यय, श्नम् प्रत्यय, श्नम् के अपवाद में च्लि को सिच् होकर अ रुध् स् त स्थिति में झलो झलि से सकार लोप एवं पूर्व धकार को जश्त्व होकर अरुद्ध रुप सिद्ध होता है। इसी प्रकार स्वयं समझे। आत्मनेपद में रूप- अरुद्ध, अरुत्साताम्, अरुत्सत। अरुद्धाः, अरुत्साथाम्, अरुद्ध्वम्। अरुत्सि, अरुत्स्वहि, अरुत्स्महि।

लृङ् में अट्, तिप्, इकार लोप, श्नम् के स्थान पर स्य, आर्धधातुक संज्ञक होने से लघूपधागुण, धकार को तकार, आर्धधातुक संज्ञा, आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध। उभयस्थल कोई विशेष कार्य नहीं होता। लृङ् परस्मैपद में रूप- अरोत्स्यत्, अरोत्स्यताम्, अरोत्स्यन्। अरोत्स्यः, अरोत्स्यतम्, अरोत्स्यत। अरोत्स्यम्, अरोत्स्याव, अरोत्स्याम।

लृङ् आत्मनेपद में पूर्ववत् प्रक्रिया में रूप- अरोत्स्यत, अरोत्स्येताम्, अरोत्स्यन्त। अरोत्स्यथाः, अरोत्स्येथाम्, अरोत्स्यध्वम्। अरोत्स्ये, अरोत्स्यावहि, अरोत्स्यामहि।

पाठगत प्रश्न 22.3

1. रुधादिगणीय धातुओं से कौन सा विकरण प्रत्यय होता है?
2. दश्च सूत्र का अर्थ क्या है?
3. श्नम् प्रत्यय विधायक सूत्र है?
4. रुधादिगणीय रुध् धातु का अर्थ क्या है?
5. रुणद्धि में णत्व किससे होता है?
6. अरुधत् में च्लि के स्थान पर अङ् या चङ् में से कौन होता है?
7. रुध् धातु से परस्मैपद लङ् सिप् में कितने रूप होते हैं?
8. श्नम् प्रत्यय में मकार इत्संज्ञा का प्रयोजन क्या है?
9. रुध् धातु से परस्मैपद लुङ् तिप् में कितने रूप होते हैं?
10. श्नसोरल्लोपः का अर्थ क्या है?

पाठ का सार

इस पाठ में स्वादिगण, तुदादिगण, रुधादिगण इन तीन गणों की समालोचना विहित है। उनमें से सर्वप्रथम स्वादिगण की प्रथम धातु सु के विषय में आलोचना की गई। वहाँ सु धातु में स्वादिभ्यः श्नु विकरण विधायक सूत्र की समालोचना की गई है। उसके बाद हुश्नुवोः सार्वधातुके, लोपश्चास्यान्यतस्यां म्वोः, उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात्, आदि सूत्रों की व्याख्या की गई है। उसके बाद तुद् धातु के विषय में समालोचना की गई है। तुद् धातु से तुदादिभ्यः शः श विकरण विधायक सूत्र की समालोचना की गई है। उसके बाद लिङ्सिचावात्मनेपदेषु सूत्र की व्याख्या की गई है। उससे तुत्सीष्ट रूप सिद्ध होता है। उसके बाद रुध् धातु की समालोचना की गई है। वहां रुधादिभ्यः श्नम् से श्नम् विकरण विधायक सूत्र की समालोचना की गई है। उसके बाद झषस्तथोर्धोऽधः सूत्र की व्याख्या की गई है। श्नसोरल्लोपः से सार्वधातुक कित्, ङित् परे हो तो, श्नम् के अकार का लोप हो जाता है। आगे लङ् सिप् में दश्च सूत्र से अरुणः, अरुणत्, अरुणद् तीन रूप सिद्ध होते हैं। इस पाठ में सभी रूपों की ससूत्र प्रक्रिया प्रदर्शित की गई है। उन्हें स्वयं सिद्ध कीजिए।

पाठांत प्रश्न

1. स्तुसुधूञ्भ्यः परस्मैपदेषु सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
2. हुश्नुवोःसार्वणातुके सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

3. लोपश्चास्यान्यतस्यां म्वोः सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
4. उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
5. तुदति की धातु रूप प्रक्रिया लिखिए।
6. तुत्सीष्ट की धातु रूप प्रक्रिया लिखिए।
7. अतौत्ताम् की धातु रूप प्रक्रिया लिखिए।
8. तुद्याः की धातु रूप प्रक्रिया लिखिए।
9. लिङ्सचावात्मनेपदेषु सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
10. श्नसोरल्लोपः सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
11. सुनोति की धातु रूप प्रक्रिया लिखिए।
12. अतौत्सीत्, तुत्सीष्ट की धातु रूप प्रक्रिया लिखिए।
13. सुन्वन्ति की धातु रूप प्रक्रिया लिखिए।
14. सु धातु परस्मैपद लिट् थल् के रूप सिद्ध कीजिए।
15. सुन्वः, सुनुवः रूप सिद्ध कीजिए।
16. असोढ्वम् रूप सिद्ध कीजिए।
17. रुणद्धि की धातु रूप प्रक्रिया लिखिए।
18. रुध् धातु से लङ् सिप् के रूप सिद्ध कीजिए।
19. रुध् धातु से लुङ् तिप् के रूप सिद्ध कीजिए।
20. रुधादिभ्यः श्नम् सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

22.1

1. श्नु विकरण।
2. सिच् को इट् का आगम।
3. अभिषव।
4. स्वादिभ्यः श्नुः।
5. असावीत्।
6. सुन्तहे, सुनुमहे।

टिप्पणियाँ

7. सुषविथ, सुषोथ।
8. तिङ्शित्सार्वधातुकम् से सार्वधातुक संज्ञा।
9. आशीर्लिङ् आर्धधातुक होने से।
10. अक्रत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः से।

22.2

1. श विकरण।
2. इक् के समीप जो हल् उस से परे हलादि लिङ् और सिच् कित् हों तङ् अर्थात् आत्मनेपद प्रत्यय परे हो तो।
3. तुदादिभ्यः शः
4. व्यथनम्।
5. अतौतीत्।
6. तुत्सीष्ठाः।
7. तुतुदिध्वे।
8. तिङ्शित्सार्वधातुकम् से सार्वधातुक संज्ञा।
9. तत्सीष्ट
10. श प्रत्यय की सार्वधातुकमपित् से अपित् होने से क्ङितिच से गुण निषेध।

22.3

1. श विकरण।
2. सिप् परे धातु के दकार को रु होता है।
3. रुधादिभ्यः श्नम्।
4. आवरण।
5. अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि।
6. अङ्।
7. अरुणः,अरुणत्, अरुणद् ये तीन रूप।
8. मिदचोऽन्त्यात्परः से अन्तिम अच् से परे।
9. अङ् में अरुधत्, सिच् में अरौत्सीत्।
10. सार्वधातुक ङित् परे श्नम् व अस् के अकार का लोप हो।